विनय पाठ | By Rohit Chaturvedi

इहि वृद्धि ठाडो होयेके प्रथम पढ़े जो पाठ
धन्य जिनेश्वर देव तुम नाश कर्म जो आठ
अनंत चतुष्टय के धनी तुम ही हो सरताज
मुक्ति वधु के कंत तुम दीन भुवन के रा।।

इहु जग की पीड़ा हरण भवदधि शोषणहार
ज्ञायत हो तुम विश्व के शिव सुख के करताज
हारता आग अंधियार के करता धर्म प्रकाश
थिरता पद दातार हो धर्ता निज गुण रास।।

धर्मा मृद उर जलधि सौ ज्ञान भानु तुम रूप
तुम्हरे चारण सरोज को नावद पिहु जग भूप
मैं वंदो जिन देव को कर अति निर्मल भाव
कर्म बंध के छेद में और ना कछु उपाव।।

भविजन को भव पूकते तुम ही तारणहार
दीन दयाल अनाथपति आतम गुण भण्डार
चिदानंद निर्मल कियो धोये कर्म रज मैल
सरल करिया जगत में भविजन को शिव गै।।

तुम पद पंकज पूजते विघ्न रोग टर जाए
शत्रु मित्रता को धरे विष निर विषत्या ख्याय
चकरी खगदर इन्द्रपद मिले आप के आप
अनुक्रम करि शिव पदिल है नेम सकल हनि पाप।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो जैसे जल बिन मीन
जन्म जरा मेरी हरो करो मोहि स्वाधीन
पतित्व बहु पवन किये विनती कौन करेव्
अनजान से तारे प्रभु जय जय जय जिनदेव।।

थकिनाव् भवदधि विषय तुम प्रभु पार करे
खेवटिया तुम हो प्रभु जय जय जय जिनदेव
राग सहित जग में रुल्यो मिले सरागी देव
वीट राग भेटचो अवै मेटो राग कुचे।।

कितनी गोद कित्नार रति कित त्रियंच अज्ञान
आज धन्य मनुष्य भयो पायो जिनवर थान
तुम को पूजे स्वरपति अहिपति नरपति देव
दाहंय भाग मेरो भयो करने लाग्यो तुम सेव।।

अशरण के तुम शरण हो निराधार आधार
मैं डूबत भव सिंधु में थियो लगाओ पार
इंद्रादिक गणपति थके कर विनती भगवान
अपनों विरद निहार के कीजे आप समा।।

तुम्हरी नेक सुदृष्टि पै जग उतरत है पाक
हाहा डूब्यो जात हो नेक निहार निकार
जो मैं कह्यु और सो तो ना मिटे उरभाव

मेरी तो तों सोवनी ताते करूँ पुकार।।

वंदो पांचो परम गुरु सुर गुरु वंदत जास
विघ्न हरण मंगल करण पूरण परम प्रकाश
चौबीसो जिनपद नमो,नमो शारदा माय
शिवमक साधक साधु नमे रच्यो पथ सुखदाय।।

मंगल मूर्ती परम पदे,पांच धरो नित ध्यान
हरो अमंगल विश्व का मंगलमय भगवान्
मंगल जिनवर पद नमो मंगल अर्हन्त देव
मंगलकारी सेद पद सो वंदो स्वमेव।।

मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवजाय
सर्व साधु मंगल करो वंदो मन उचकाय
मंगल सरस्वती मात का मंगल जिनवर धर्म
मंगलमय मंगल करो हरआसाता कर्म।।

या विधि मंगल से सदा जग में मंगल होये
मंगल नाथू राम ये भवसागर ढ़ढ़ पो।।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b5%e0%a4%bf%e0%a4%a8%e0%a4%af-%e0%a4%aa%e0%a4%be%e0%a4%a0-by-rohit-chaturvedi/